खोरठा जगत के झारपात :डॉ. अजीत कुमार झा

[1]डॉ. लम्बोदर महतो

शोध सार

खोरठा भाषा झारखंड की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जिसका साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है। यह भाषा न केवल झारखंड के सांस्कृतिक स्वरूप को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि समाज की समस्याओं और आकांक्षाओं को भी प्रस्तुत करती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य डॉ. अजीत कुमार झा के खोरठा भाषा और साहित्य में योगदान का विश्लेषण करना है। उनके कार्य ने खोरठा साहित्य को एक नई दिशा दी है और इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य किया है।

मूल शब्द : खोरठा भाषा एवं साहित्य, झारखंडी संस्कृति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, खोरठा व्याकरण ।

[1]लेखक
झारखण्ड विधानसभा सदस्य , पीएचडी रांची विश्वविद्यालय रांची झारखंड ।

प्रस्तावना

डॉ. अजीत कुमार झा का परिचय : व्यक्तित्व और शिक्षा

डॉ० अजित कुमार झा जी का जन्म 20 जून 1939 ई० में गाँव चंडीपुर थाना पेटरवार जिला बोकारो में हुआ । इनके पिताजी का नाम लक्ष्मी नारायण झा एवं माता जी का नाम कुसुमबाला है । पेटरवार हाईस्कूल से मेट्रिक (1959) , संत कोलम्बस कॉलेज हाजारीबाग से बी०एस०सी० (1963) करने के बाद इन्होने एक विज्ञानं शिक्षक के रूप में डुंगर टाँगर (गुमला), दांतु (पेटरवार) आर रेल श्रमिक उच्च विद्यालय पतरातू में कार्य करने के बाद 1975 से पी०टी०पी०एस० में स्टोर कीपर के रूप में कम करते हुए 1999 रिटायर हुए । इन्होने अपने सम्पूर्ण जीवन को खोरठा भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करने में समर्पित कर दिया तथा 29 सितम्बर 2013 ई० में इनकी मृत्यु हुई।

डॉ. अजीत कुमार झा का जन्म झारखंड के एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही उनका झुकाव साहित्य और भाषा की ओर हो गया। उन्होंने हिंदी और खोरठा दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन किया। उनकी रचनाएँ समाज, संस्कृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करती हैं। चूंकि स्वयं उन्होंने विज्ञान के शिक्षक के रूप कार्य किया इसलिए उनकी रचनाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की झलक दिखती है । उनके विचार समावेशी एवं तार्किकता से भरपूर है । यही कारण है की उनके रचनाओं में सतहीपन के लिए कोई जगह नहीं है बल्कि वैचारिक गंभीरता और परिपक्वता स्पष्ट दिखते- है । उनकी रचनाये कपोल कल्पना मात्र नहीं है बल्कि झारखंडी समाज और संस्कृति में उपस्थित समस्याओं को उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रमुखता से उठाया है एवं उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है । उनकी रचनाओ ने खोरठा भाषा एवं साहित्य को ना सिर्फ समृद्ध किया है बल्कि एक नयी दिशा भी प्रदान किया है ।

साहित्यिक यात्रा

- प्रारंभ में उन्होंने कविताएँ और कहानियाँ लिखकर खोरठा साहित्य को समृद्ध किया। खोरठा काठे पयदेक खंडी (एकल कबिता संग्रह) एवं कविता पुराण (बाल गीत) जैसे कविता संग्रह की रचना की ।सामाजिक सर् जुइत निशान ,मेकमेकी ना मेटमाट (नाटक) साईर सरगठ (उपन्यास) खोरठा रस छंद अलंकार की रचना की ।
- बाद में उन्होंने साहित्य के अन्य रूपों जैसे निबंध खोरठा काठएक गदयेक खंडी (एकल निबंध संग्रह) और लोककथाओं पर कार्य किया।

खोरठा साहित्य में योगदान

1. साहित्यिक कृतियाँ

डॉ. झा ने खोरठा भाषा में कई महत्वपूर्ण कविताएँ, कहानियाँ और निबंध लिखे। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं:

खोरठा काठे गइदेक खंडी' में कई महत्वपूर्ण कहानियां को संकलित की गयी हैं जो खोरठा क्षेत्र में प्रचलित है। खोरठा पद्य साहित्य को समृद्ध करने के लिए 'खोरठा काठे पइदेक खंडी' लिखी. इस पुस्तक में खोरठा कविताओं के साथ में हिंदी अर्थ भी बताया गया है ।

एक खोरठा उपन्यास भी लिखा, जिसका नाम है- 'सइर सगरठ'. इस पुस्तक में खोरठा के ठेठ शब्दों का प्रयोग हुआ है. उन्होंने खोरठा भाषा में 'मेका मेकी ना मेट माट' नामक नाटक पुस्तक की रचना किया. इसमें ग्रामीण परिवेश से जुड़े संपूर्ण पहलुओं को शामिल किया है।

उन्होंने खोरठा भाषा की प्रतिनिधि पत्रिका 'तितकी' का सफलतापूर्वक संपादन किया. इस पत्रिका के कई अंकों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है. इन पुस्तकों को वर्तमान समय में विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है।

2. भाषाई संरचना और व्याकरण

उन्होंने खोरठा भाषा के व्याकरण और संरचना पर गहन शोध किया। किसी भी भाषा को स्थापित करने के लिए उसका व्याकरण का होना आवश्यक है । जबतक किसी भाषा की व्याकरण नहीं होगा उसे अकादिम रूप से स्थापित किया जाना संभव नहीं है । डॉ झा के पूर्व खोरठा भाषा के पास अपना कोई व्याकरण नहीं था यद्यपि बोलचाल के भाषा के रूप में यह स्थापित हो चुका था। अकादमिक भाषा के रूप में खोरठा भाषा एवं साहित्य को स्थापित करने हेतु उन्होंने सड़क से संसद तक संघर्ष किया था । सभी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों में उन्होंने खोरठा भाषा के पक्ष में आवाज उठाया । इसी दौरान इन्होने खोरठा भाषा के व्याकरण की कमी को शिद्दत से महसूस किया और उन्होंने "खोरठा सहित सदनिक व्याकरण" जैसे कालजयी खोरठा व्याकरण की रचना किया जिसके कारण खोरठा भाषा एवं साहित्य को अकादमिक भाषा के रूप में स्थान प्राप्त हो सका । उनके कार्यों ने खोरठा भाषा को साहित्यिक स्तर पर मान्यता दिलाने में मदद की। आज झारखण्ड के सभी विश्वविद्यालयों में खोरठा भाषा एवं साहित्य को पढ़ाया जाता है ।

एके झा खोरठा जगत में झारपात के नाम से जाने जाते हैं। खोरठा भाषा-साहित्य में उनका बहुमूल्य योगदान है। उन्होंने सर्वप्रथम खोज निकाला कि खोरठा भाषा की उत्पति खरोष्ठी लिपि से हुई हैं, जिसका संबंध विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता के हड़प्पा काल से है।

उन्होंने खोरठा भाषा के पहले व्याकरण पुस्तक की रचना की. इसका नाम 'खोरठा सहित सदानिक व्याकरण' है। इस व्याकरण में हिंदी व्याकरण का सहारा लिया गया है क्योंकि खोरठा भाषा परिवार की दृष्टिकोण से आर्य भाषा परिवार से संबंधित है।

साथ ही खोरठा भाषा की लेखनी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस प्रकार व्याकरणिक दृष्टिकोण से खोरठा भाषा में एकरूपता लाने का प्रयास किया। उन्होंने भाषा विज्ञान से संबंधित

प्रथम पुस्तक की रचना की, जिसका नाम 'खोरठा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन' है । इस पुस्तक में भाषा विज्ञान से जुड़ी संपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है।

3. अनुवाद कार्य

उन्होंने अन्य भाषाओं के साहित्य को खोरठा में अनुवादित किया, जिससे खोरठा साहित्य को एक नई दिशा मिली। इनके कठिन परिश्रम का फल है कि खोरठा भाषा ने एक छोटे-से कोंपल से बढ़कर वटवृक्ष का स्वरूप ले लिया है। उन्होंने खोरठा भाषा से जुड़ी दर्जनों पुस्तकों की रचना और संपादन किया है। वह खोरठा भाषा के प्रचार-प्रसार में हमेशा लगे रहते थे ।

4. सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश

उनकी रचनाओं में समाज में व्याप्त कुरीतियों, महिलाओं की स्थिति, और ग्रामीण विकास जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया है। उन्होंने अपने रचनाओं में आम जनजीवन को प्रधानता दिया । उनके कहानियों एवं उपन्यास के पात्र आम जनजीवन है जिनके समस्याओं को इन्होंने बेहतरीन तरीके से उकेरा है ।डॉ झा ने कपोल कल्पित कहानियों के जगह पर अपने रचना को सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित किया है । उनके द्वारा रचित कहानियों के मुख्य पात्र झारखंडी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश के प्रतिनिधित्व करते है। इनकी कहानियाँ आम लोगों की कहानियाँ हैं जिसके मूल में झारखंडी संस्कृति एवं सभ्यता निहित है । इनकी कहानियाँ मौलिक एवं वास्तविक अनुभवों पर आधारित है ।

खोरठा साहित्य पर प्रभाव

1. सांस्कृतिक संरक्षण

डॉ. झा की रचनाओं ने झारखंड की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का कार्य किया है। उनकी कविताएँ और कहानियाँ झारखंड की संस्कृति और परंपराओं का जीवंत दस्तावेज़ हैं। डॉ झा मानवतावादी रचनाकार थे उनकी रचनओं में मानवीय संवेदनाओं के साथ साथ झारखंडी संस्कृति एवं पहचान के प्रति अपनापन दिखता है । उनकी रचनाये झारखण्ड के सामाजिक एवं संस्कृति के प्रतिबिम्ब हैं । उन्होंने खोरठा भाषा के उत्थान के लिए हरसंभव प्रयास किया । खोरठा भाषा एवं संस्कृति के विकास के लिए उन्होंने अनेक संस्थाओं का निर्माण किया तथा अखरा को जीवित किया ।

2. नई पीढ़ी को प्रेरणा

उन्होंने युवा लेखकों और कवियों को खोरठा साहित्य से जोड़ने का प्रयास किया। उनके नेतृत्व में कई नई प्रतिभाएँ उभरकर सामने आईं। खोरठा ढअकी छेतार कमिटी, कोठार रामगढ एवं खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद् के रूप में उनके द्वारा स्थापित संस्थाए आज भी खोरठा भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए प्रेरणा प्रदान कर रही हैं । उन्होंने अपनी रचनायों के माध्यम से नयी पीढ़ी के रचनाकारों के लिए एक नयी दिशा प्रदान करने का कार्य किया है । उनकी रचनाओं ने खोरठा भाषा एवं साहित्य में नयी संभावनाओं का द्वार खोल दिया है । बोलचाल की भाषा से लेकर अकादमिक भाषा के रूप में खोरठा का सफ़र उतार चदाव का रहा और इसके मार्गदर्शन में डॉ अजित कुमार झा का योगदान महत्वपूर्ण रहा है इसी कारण से लुआठी पत्रिका के संपादक गिरधारी गोस्वामी ने डॉ झा के काल को खोरठा साहित्य के पुनर्जागरण का काल कहा है ।

3. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान

डॉ. झा के कार्यों ने खोरठा साहित्य को झारखंड के बाहर भी पहचान दिलाई। उन्होंने विभिन्न साहित्यिक मंचों पर खोरठा भाषा का प्रतिनिधित्व किया। झा जी खोरठा भाषा को अनार्य मूलक भाषा मानते थे । इसके कई अनार्य मुलक विशेषताओं को तथा मानवतावादी पक्षों को इन्होंने राष्ट्रीय एवं अन्त राष्ट्रीय मंचों में रखा । भारतीय विज्ञान कांग्रेस संगठन के सम्मेलन में इन्होंने खोरठा भाषा के मानवीय पक्षों को सबके सामने रखा और खोरठा भाषा को पहचान दिलाई ।

खोरठा साहित्य में नवाचार

डॉ. झा ने साहित्यिक नवाचार करते हुए पारंपरिक विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों पर भी लेखन किया। उनके विचार स्पष्ट, परिपक्व एवं दूरदर्शी थे । उन्होंने अपने रचनाओं में सदेव नवाचार को स्थान दिया । वे स्वयं मौसम विज्ञानी थे इस विषय में भी उन्होंने लिखा । विज्ञान उनके रचनाओं के मूल में थे ।वे अंधविश्वास एवं रुदिवादिता के घोर विरोधी थे । उनको बनावटी बिल्कुल पसंद नहीं था । इसलिए उनके विचार भी स्पष्ट एवं एवं व्यक्तित्व में खरापन था । उन्होंने खोरठा भाषा के लिए व्याकरण की रचना किया जिसके कारण खोरठा भाषा अकादमिक भाषा के रूप में विश्वविद्यालयों में पदाया जाने लगा ।

साहित्यिक गुणवत्ता

उनकी रचनाओं में भाषा की सरलता और विषय की गंभीरता का समन्वय देखने को मिलता है। उनके रचनाओं में तार्किक एवं वैज्ञानिकता का पुट दिखता है। , उनके साहित्य गंभीरता के साथ लोकिक गरिमाओं को ध्यान में रख कर रचे गये हैं। उनकी रचनाये आम जनो के जीवन को प्रतिबिंबित करते हैं परन्तु किसी भी स्तर पर छिछलापन को प्रदर्शित नहीं करते है।

निष्कर्ष

डॉ. अजीत कुमार झा का खोरठा भाषा और साहित्य में योगदान अमूल्य है। उनके कार्य न केवल खोरठा भाषा को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इसे एक व्यापक पहचान दिलाने में भी सहायक हैं। उनका साहित्य झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने का कार्य करता है।

संदर्भ

1. झा, अजीत कुमार. "*खोरठा के रंग*". झारखंड साहित्य परिषद, 2015।
2. https://www.prabhatkhabar.com/vishesh-aalekh/1336169-
3. कुमार, सुरेश. "*झारखंड की लोकभाषाएँ*". रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010।
4. सिंह, अनिल. "*खोरठा साहित्य का सामाजिक संदर्भ*". साहित्य समीक्षा, खंड 12, अंक 3, 2018।
5. शर्मा, सीमा. "*झारखंड की सांस्कृतिक विविधता*". लोककला और साहित्य, 2020।